REVIEW OF RESEARCH

वर्तमान शिक्षा में पर्यावरण शिक्षा

वन्दना तिवारी

शोध छात्रा, हिमगिरी जी यूनिवर्सिटी, देहरादून.

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 8 | MAY - 2019

सार

किसी भी राष्ट्र का विकास करने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारतीय संस्कृति साहित्य में पर्यावरण शिक्षा की जड़े अधिक प्राचीन है। उपनिषदों में भी मानव एवं प्रकृति की पारस्परिक निर्भरता का उल्लेख मिलता है। वर्तमान में भोगवादी सभ्यता ने विकास का जो रूप प्रस्तुत किया है उसी में पर्यावरण के विनाश के बीज छिपे हैं। हमें अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये प्रकृति का संरक्षण करने वाली तकनीक अपनानी होगी। इसके लिये हमें वर्तमान शिक्षा के माध्यम से छात्रों में आवश्यक सूचना के हस्तान्तरण के साथ ही उचित दृष्टिकोण एवं कौषलों का विकास करना अनिवार्य है। पर्यावरण के शिक्षा का मकसद पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता पैदा करना ही नही है बल्कि पर्यावरण के अनुकूल कार्यवाही करना भी है, ताकि छात्रों में एक ऐसे लोकाचार का सृजन करें जो समाज में निर्वहनीय जीवन शैली का आधार बने। स्वस्थ पर्यावरण ही मानव जीवन का आधार है। पर्यावरण की अनुपस्थिति में जीवन की कल्पना असम्भव है। फलस्वरूप आज विश्व में पर्यावरण शिक्षा का महत्व बढ़ गया है। इसी महत्व को देखते हुए पर्यावरण अध्ययन का विषय बन गया है। जिसको भारत के सभी विद्यालयों में विषय के रूप में मान्यता दे दी गयी है। पर्यावरण शिक्षा तब तक प्रभावी नहीं हो सकती जब तक इसके लिये प्रभावी व्यूह की रचना ना की जा सके। पर्यावरण संरक्षण के कई आयाम व विधियां हैं जैसे खेलकूद, नाटक, पर्यावरण चेतना रैली, बागवानी, वृक्षारोपण के कई कार्यक्रम आदि सभी कार्य पर्यावरण चेतना के लिये उपयोगी है। पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से ही हम पर्यावरण असंतुलन रूपी दानव से अपने आपको बचा पायेंगे। पर्यावरण शिक्षा का मूल उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों के दोहन को रोकना और प्राकृतिक पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाना है।

प्रस्तुत शोध पत्र में पर्यावरण शिक्षा की महत्तवपूर्ण भूमिका का वर्णन किया गया है कि किस प्रकार पर्यावरण शिक्षा के द्वारा शिक्षार्थियों मे प्राथमिक स्तर से लेकर उच्चशिक्षा तक पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा की जा सकती है तथा पर्यावरण के प्रति रूचियों, अभिवृत्तियों और मूल्यों का विकास किया जा सकता है।

शब्द कुंजी:– पर्यावरण शिक्षा, पर्यावरण, पर्यावरण जागरूकता .

परिचय:–

पर्यावरण का सीधा सम्बन्ध प्रकृति से है। हमारे आस पास का वातावरण जिसमें सभी प्रकार के जीव, नदी, तालाब, पहाड़ तथा पेड़–पौधे आते है, और जिसमें सभी जीवधारी जीवित रहते हैं, वह पर्यावरण कहलाता है। पर्यावरण का सीधा सम्बन्ध प्रकृति से है। अपने परिवेश में हम तरह तरह के जीव जन्तु पेड़–पौधे तथा अन्य सजीव–निर्जीव वस्तुए पाते हैं, यह सब पर्यावरण की रचना करते है। आधुनिक समाज को पर्यावरण से सम्बन्धित समस्याओं की शिक्षा व्यापक स्तर पर दी जानी चाहिए। हमारे पास पर्यावरण सम्बन्धी पाठ्य सामग्री की कमी नहीं है। वास्तव में आज पर्यावरण से सम्बद्ध उपलब्ध ज्ञान को व्यवहारिक बनाने की आवश्यकता है ताकि समस्या को जनमानस सहज रूप से समझ सके। ऐसी विषम परिस्थिति में समाज को उसके कर्तव्य तथा दयित्व का अहसास होना आवश्यक है। इस प्रकार समाज में पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा की जा सकती है। इसलिए पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता का अनुभव व्यापक रूप में किया गया है।

पर्यावरण शिक्षाः–

पर्यावरण शिक्षा वह शिक्षा है जो हमें पर्यावरण का ज्ञान प्रदान करती है। पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से हम अपने पर्यावरण के साथ सामन्जस्य स्थापित करते हुए परिस्थितिकी असन्तुलन में सुधार लाने तथा प्राकृतिक संसाधनों के दोहन और प्रकृति प्रदूषण के कारणों, उनके दुष्परिणामों से अवगत कराया जाता है और साथ ही उन्हें प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, प्रदूषण की रोकथाम की नवीन विधियां बतायी जाती है। पर्यावरण शिक्षा का ज्ञान मानव जीवन के बहुमुखी विकास का एक प्रबल साधन है। इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक परिवक्वता लाना है। पर्यावरण शिक्षा का लक्ष्य नागरिकों मे पर्यावरणीय जागरूकता, रूचियों आभिवृत्तियों, कौशलों एवं मूल्यों का विकास करना है। साथ ही नागरिको में यह अनुभूति जागृत करना कि मानव पर्यावरण का अंग है। पर्यावरण के बिना मानव का कोई असतित्व नहीं हैं।

पर्यावरण शिक्षा का सम्बन्ध वर्तमान तथा भविष्य से है। पर्यावरण की अनुपस्थिति में जीवन की कल्पना करना असम्भव है। फलस्वरूप आज विश्व में पर्यावरण शिक्षा का महत्व बढ़ गया है। शिक्षा के उददेश्यों की पूर्ति हेतु प्राकृतिक वातावरण का ज्ञान होना अति आवश्यक है। आज के भौतिकावदी युग में परिस्थितियां भिन्न होती जा रही है। एक ओर जहां विज्ञान एंव तकनीकी के विभिन्न क्षेत्रों में नये–नये अविष्कार हो रहे हैं तो दूसरी ओर मानव परिवेश भी उसी गति से प्रभावित हो रहा है। आने वाली पीढ़ी को पर्यावरण में हो रहे परिवर्तनों का ज्ञान पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से दिया जाना अति आवश्यक है। शिक्षार्थियों को प्रकृति तथा शिक्षा के क्षेत्र में पर्यावरण का ज्ञान मानवीय सुरक्षा के लिये अति आवश्यक है।

उत्तराखण्ड के विद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा

पर्यावरण शिक्षा यह सिखाने के सुनियोजित प्रयास की ओर संकेत करती है कि किस प्रकार मनुश्य चिरस्थाई अस्तित्व के लिए स्वाभाविक वातावरण की क्रियायें और विशेषतः अपने व्यवहार और पारिस्थितिक तंत्र मे सामन्जस्य स्थापित कर सकता है। इसके लिए पर्यावरण सुरक्षा के प्रति जनता में चेतना जाग्रत करनी पड़ेगी और यह कार्य शिक्षा के माध्यम से सरलतापूर्वक किया जा सकता है। दिसम्बर 2003 में सर्वोच्च न्यायालय ने सभी राज्यों व शिक्षण संस्थाओं को यह आदेश दे दिया कि अगले सत्र में प्राथमिक स्तर से विश्वविद्यालय स्तर तक के पाठ्यक्रम में पर्यावरण अध्ययन को एक अनिवार्य विषय के रूप मे शामिल किया जाये इस आदेश का अनुपालन करते हुये उत्तराखण्ड राज्य मे 2004 से प्राथमिक स्तर से विश्वविद्यालय स्तर तक इस विषय को अनिवार्य रूप से पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर दिया गया है। पर्यावरण शिक्षा को भारत के सभी विद्यालयों में विषय के रूप में भारत सरकार के द्वारा मान्यता दे दी गयी है। उत्तराखण्ड के स्कूलों में पर्यावरण शिक्षा का विषय औपचारिक रूप से पढ़ाया जा रहा है। इस शब्द का प्रयोग प्रायः विद्यालय प्रणाली के अर्न्तगत प्राथमिक से लेकर माध्यमिक शिक्षा के बाद तक दी जाने वाली शिक्षा की ओर संकेत करने के लिये किया जाता है। पर्यावरण शिक्षा तब तक प्रभावी नहीं हों सकती जब तक इसके लिये प्रभावी व्यूह की रचना न की जा सके। पर्यावरण संरक्षण के कई आयाम व विधियां है। जैसे पर्यावरण, भ्रमण, नाटक, वृक्षरोपण, क्लबों का निर्माण, पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से ही हम पर्यावरण असन्तुलन रूपी दानव से अपने आप को बचा पायेंगे।

प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा

पर्यावरण अध्ययन प्राथमिक कक्षाओं में कार्य करने का आमतौर पर सरल कार्य माना जाता है। क्योंकि माना जाता है कि यह विषय अथवा इस विषय की प्रकृति बच्चों की परिवेश से जुड़ी होती है। प्राथमिक कक्षाओं में विषय के रूप में पर्यावरण अध्ययन द्वारा बच्चे में अपने आस पास के यानि उसके प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण के प्रति बनी समझ को परिमार्जित कर पुख्ता किया जाता है, एवं पर्यावरण संचेतना तथा वास्तविक अनुभव तथा ज्ञान प्रदान किया जाता है इसी बात को ध्यान मे रखते हुए

गोपाल, सरोजनी (1992) ने ''प्राइमरी स्कूल के छात्रों पर पर्यावरण शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन'' किया व निम्न परिणाम प्राप्त किए। पर्यावरण शिक्षा परिक्षण के प्राप्तांको का विश्लेषण करने पर पाया गया कि पर्यावरण शिक्षा का छात्रो पर अच्छा प्रभाव पड़ रहा है। अध्ययन में पाया गया कि पर्यावरण शिक्षा मे सहभाग–अधिगम का ज्यादा अच्छा प्रभाव पड़ सकता है।

राजपूत जे०एस०सक्सेना, ऐ०बी० और जाधो, बी०जी० – "An experiment in implementation of experimental approach at primary level" विषय पर शोध किया व निम्न निश्कर्ष प्राप्त किए। पर्यावरणीय उपागम के माध्यम से छात्रो को शिक्षा प्रदान करने पर छात्रो की पर्यावरणीय जागरुकता में वृद्धि पायी गयी शोध मे यह भी पाया गया कि छात्रो को प्रश्न उत्तर लिखने की अपेक्षा पाठ्यक्रम रुचिपूर्ण व छात्रो से सम्बधित करके प्रस्तुत किया जाय को शिक्षण अधिक सार्थक होगा। हमारी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूप रेखा में इसे इस बात को ध्यान में रखकर बनायी गयी है कि पर्यावरण की सुरक्षा महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में प्राथमिक कक्षाओं में पर्यावरण अध्ययन को समेकित पद्वति से अधिक सशक्त रूप से पढाने पर बल दिया गया। कक्षा 1 व 2 स्तर पर पर्यावरण कौशलों एवं सरोकारों का भाषा तथा गणित के विषयों के साथ एकीकृत रूप में पढाने की सिफारिश की गयी है। तथा कक्षा 3 से 5 तक अलग विषय के रूप में पढाये जाने की संस्तुति की गयी है।

माध्यमिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा

माध्यमिक स्तर पर छात्रो को पर्यावरण शिक्षा के घटको एवं समस्याओं की वास्तविक जीवन मे सार्थकता का बोध होना चाहिए, और साथ ही पर्यावरण सम्बन्धी ज्ञान को प्रदान करने के लिए पर्यावरण शिक्षा का स्वरुप इस प्रकार होना चाहिए कि जिससे छात्रो मे पर्यावरणीय समस्याओ के समाधान के लिए भावनाओं एवं मूल्यो को विकसित किया जा सके। माध्यमिक विद्यालयों में पर्यावरण पाठ्यक्रम विज्ञान के अन्तर्गत ही या विद्यार्थियों के रुचि समूह या क्लबों के आधार पर एक केन्द्रित विषय होना चाहिए। पर्यावरण शिक्षा कक्षा की पाठ योजना तक ही प्रतिबन्धित नहीं होनी चाहिए। अनेकों ऐसे तरीके हैं जिनके द्वारा बच्चों को वातावरण के बारे में शिक्षा दी जा सकती है जिसमें वह रह रहे है। विद्यालय के आंगन में अनुभव पर आधारित शिक्षा व राष्ट्रीय उद्यानों के प्रत्यक्ष भ्रमण से लेकर विद्यालय के बाद हरित क्लबों और विद्यालय स्तर की चिरस्थायी परियोजनाओं तक पर्यावरण एक ऐसा विषय है जो सुलभता पूर्वक और तत्परता से गमनीय है। इस विषय को लेकर **भोट्टी, आर० पी, चाफेकर एस०बी० (1981)** " Environment education programe for schools-case study" विषय पर प्रयोगात्मक अध्ययन किया।

अध्ययन के लिए पर्यावरण शिक्षा पर आधारित कार्यक्रम तैयार किया गया। इस शैक्षिक कार्यक्रम के अन्तर्गत व्याख्यान, भ्रमण, प्रोजेक्ट, निबन्ध प्रतियोगिता, क्विज व पेन्टिग प्रतियोगिता आदि क्रियाकलापों को शमिल किया गया, जिसके परिणाम स्वरुप छात्र पर्यावरण व उससे सम्बन्धित समस्याओ को अधिक अच्छे ढंग से समझ पाए व उन्होने पर्यावरण समस्याओ का समाधान करने व पर्यावरण की गुणवत्ता मे सुधार लाने के लिए किए जाने वाले प्रयासो मे हिस्सा लेने मे रुचि दिखाई।

इसके अलावा पृथ्वी दिवस का मनाया जाना या E. E. सप्ताह में भाग लेना (जो नेशनल इनवायरमेंट एजुकेशन प्रोग्राम) द्वारा चलाया जाता है। पर्यावरण शिक्षा के प्रति अपनी शिक्षा को समर्पित करने का एक बहुत अच्छा तरीका है। सर्वाधिक असरदार होने के लिये एक समग्र माध्यम का प्रोत्साहन करना होगा जिसमें उदाहरणों की मुख्य भूमिका हो जिसके अर्न्तगत कक्षा और विद्यालय के मैदान में दीर्घकालिक कक्षाओं का आयोजन होना और अभिभावकों और विद्यार्थियों को पर्यावरण शिक्षा को अपने घर तक ले जाने के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

स्नातक/स्नातकोत्तर स्तर पर पर्यावरण शिक्षा

उच्चस्तर पर पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से छात्रों को पर्यावरण व पर्यावरण सुरक्षा से सम्बन्धित नीतियो व मुद्दो की जानकारी दी जानी चाहिए और साथ ही पर्यावरण सम्बन्धी ज्ञान को प्रदान करने के लिए पर्यावरण शिक्षा का स्वरुप इस प्रकार होना चाहिए कि जिससे छात्रो मे पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए अभिवृत्ति व मूल्यो का विकास हो सके पर्यावरण एक बहुआयामी विषय है। आज भारत ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता महसूस की जा रही है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने स्नातक स्तर पर इस पाठ्यक्रम को अनिवार्य कर दिया है। आज की आवश्यकता है कि प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरण की जानकारी रखे इसे क्षतिग्रस्त होने से रक्षा करे तथा इसके उत्थान में भागीदार बने। इसी विषय को लेकर **के० शिवा कुमार व पाटिल, एस मंगला (2007)** ने **"स्नातकोत्तर स्तर के छात्रो की पर्यावरणीय शिक्षा के प्रभाव**

का अध्ययन'' किया व शोध के दौरान यह निश्कर्ष पाये गए कि यदि शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर शिक्षा के विशिष्ट अनुशासन के बजाय सार्थक पर्यावरणीय जागरुकता सम्बन्धी शिक्षा दी जाय तो पर्यावरणीय शिक्षा,पर्यावरणीय प्रदूषण को नियन्त्रित करने का एक उत्तम साधन हो सकता है।

राजू जी (2007) ने कुहडलोर जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों की पर्यावरणीय नैतिकता का अध्ययन किया और निम्न परिणाम प्राप्त किये। उच्चतर माध्यमिक छात्रों में पर्यावरणीय नैतिकता का स्तर उच्च पाया गया। छात्राओं में पर्यावरणीय नैतिकता छात्रों की अपेक्षा अधिक पायी गयी। ग्रामीण उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों में पर्यावरणीय नैतिकता का स्तर शहरी छात्रों की अपेक्षा अधिक पाया गया। **पाई० एस० एस० जी० ने कालेज स्तर एक छात्रों के लिये जीवन पर्यनत शिक्षा पर आधारित पर्यावरण अध्ययन** के पाठ्यक्रम को प्रयोगात्मक समूह पर लागू कर प्रयोगात्मक समूह की तुलना नियन्त्रित समूह से की, व निम्न परिणाम प्राप्त किये। उच्चतर माध्यमिक छात्रो मे पर्यावरणीय नैतिकता का स्तर उच्च पाया गया, छात्राओं पर्यावरणीय नैतिकता का स्तर छात्रो की अपेक्षा अधिक पायी गयी। इस प्रकार पर्यावरण अध्ययन विषय को स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के लिये अनिवार्य करने का पर्यावरणीय संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इससे बिगड़ते पर्यावरण का उद्धार होने के साथ साथ इसकी सम्पन्नता भी बढ़ेगी। पर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम का प्रभाव विद्यार्थी के आचरण एवं दैनिक क्रियाकलापों में भी स्पष्ट परिलक्षित होगा। इसके अध्ययन से एक तरफ जहां स्थानीय व भूमण्डलीय प्राकृतिक संसाधन विभिन्न पारिस्थितिक तन्त्रों एवं जैवविविधताओं का संरक्षण हो सकेगा, वहीं दूसरी तरफ प्रदूषण, सामाजिक पर्यावरणीय समस्याओं एवं जनसंख्या वृद्वि का पर्यावरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों मे कमी हो सकेगी। विद्यार्थियों को अपने आसपास के पर्यावरणीय पुनर्स्थापना एवं सम्वर्द्धन में सहायक सिद्व होगी।

निष्कर्ष–

विभिन्न मानवीय क्रिया कलापों के फल स्वरुप हमारा सामाजिक परिवेष बदल रहा है लगातार प्रकृति के साथ खिलवाड़ व संसाधनो का अपव्ययीकरण प्रयोगों के कारण पर्यावरण असंतुलन बढ़ रहा है इस असंतुलन को रोकने के लिए पर्यावरण के प्रति जागरुकता उत्पन्न करने की आवश्यकता है छात्र ही भविष्य के कर्णधार है राष्ट्र के नागरिक के रुप मे समाज की महत्वपूर्ण इकाई के रुप मे युवा ही विभिन्न भूमिकाओं का निर्वहन करेंगे। विभिन्न भूमिकाओं के निर्वहन मे पर्यावरण के साथ जारी छेड़–छाड़ मे सहयोग करेंगे। अथवा पर्यावरण के महत्व को समझते हुए इसके संरक्षण मे अपना सहयोग देंगे अतः प्राथमिक से उच्चस्तर तक के छात्रो को पर्यावरण के प्रति जागरुक बनाने के लिये पर्यावरण शिक्षा को प्रभावशाली बनाने की आवश्यकता है।

अतः पर्यावरण शिक्षा एक व्यक्ति तथा समुदाय को सुखद एवं दीर्घायु जीवन बिताने हेतु तैयार करती है। अतः पर्यावरणीय शिक्षा का लक्ष्य राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का इस प्रकार विकास करना होना चाहिये, जिससे व्यक्ति पर्यावरण एवं उससे सम्बन्धित समस्याओं की जानकारी प्राप्त कर उन समस्याओं से अपनी सम्बंद्धता स्थापित करते हुये वर्तमान एवं भावी समस्याओं को समझ सके, एवं उनका समाधान कर सके।

संदर्भ साहित्य

1. **के., शिवा कुमार पाटिल, मंगला (2007)**, स्नातकोत्तर स्तर के छात्रों की पर्यावरणीय अभिवृत्ति पर पर्यावरणीय शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन। एजूट्रेक्स, 27–32 अप्रैल, हैदराबादः नीलकमल पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड।
2. **राजू जी (2007),** उच्चतर माध्यामिक स्तर के छात्रों की पर्यारणीय नैतिकता का अध्ययन, एजुट्रेक्स, जुलाई, 34–36। हैदराबादः नील कमल पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड।
3. **गोपाल कृष्णनन, सरोजनी (1992),** प्राईमरी स्कूल के छात्रों पर पर्यावरण शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन। पी.एच.डी. अविनाश लिंगम इंस्टीट्यूट फॉर होम सांइस एण्ड हायर एजूकेशन फॉर वीमेन, फिफ्त सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, वॉल्यूम प्प, 1754, नई दिल्लीः एन.सी.ई.आर.टी.।
4. **शहनवाज(1990),** माध्यमिक व उच्च मामध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों व छात्रों की पर्यावरण जागरूकता व पर्यावरण अभिवृत्ति का अध्ययन। पी.एच.डी., यूनिवर्सिटी ऑफ राजस्थान, फिफ्त सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, वॉल्यूम II, 1757, नई दिल्लीः एन.सी.ई.आर.टी.।

5. **राजपूत, जे. एस. सक्सेना ऐ. बी. और जाधो, वी. जी. (1980),** एन एक्सपेरिमेन्ट इन इम्पलीमेन्टेशन ऑफ एनवायरमेन्टल अप्रोच एट प्राईमरी लेवल। फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, वॉल्यूम–II, नई दिल्लीः एन.सी.ई.आर.टी.।

वन्दना तिवारी
शोध छात्रा, हिमगिरी जी यूनिवर्सिटी, देहरादून.

LBP PUBLICATION